Allah Walon Ke 12 Waqiat (HINDI)

हफ़्तावार रिसाला : 467
Weekly Booklet : 467

अल्लाह वालों के 12 वाक़िआत

“कश्फ़ुल महजूब” से

(सफ़्हात : 20)

दाता हुज़ूर का मुख़्तसर तआरुफ़ 01
हर ग़म के बदले एक नूर 07
हाफ़िज़े की तबाही का एक सबब 14
एक नेकी काम आ गई 16

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

अल्लाह वालों के 12 वाक़िआत (क़िस्त : 1)[1]

दुआए अ़त्तार : या अल्लाह पाक ! जो कोई 20 सफ़हात का रिसाला "अल्लाह वालों के 12 वाक़िआत (क़िस्त : 1)" पढ़ या सुन ले उसे अपने नेक बन्दों का ख़ास फ़ैज़ान अ़ता फ़रमा कर मां बाप और ख़ानदान समेत जन्नतुल फ़िरदौस में बे हिसाब दाख़िला नसीब फ़रमा। اٰمِيْن بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** "जो शख़्स सुब्हो शाम मुझ पर दस दस बार दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा बरोज़े क़ियामत मेरी शफ़ाअ़त उसे पहुंच कर रहेगी।" (الترغيب والترهيب، 1/261، حديث:29)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

दाता हुज़ूर رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه का मुख़्तसर तआ़रुफ़

अबुल ह़सन, सय्यिद अ़ली बिन सय्यिद उ़स्मान ह़जवेरी अल मारूफ़ दाता गंज बख़्श رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه की विलादते मुबारका कमो बेश 400 हिजरी में ग़ज़नी (अफ़ग़ानिस्तान) में हुई, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه के ख़ानदाने आ़लीशान ने ग़ज़नी के दो मह़ल्लों जुल्लाब व हजवेर में रिहाइश इख़्तियार फ़रमाई, इसी लिए आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه हजवेरी जुल्लाबी कहलाते हैं। (फ़ैज़ाने दाता अ़ली हजवेरी, स. 4)

1...येह रिसाला मुफ़्ती सय्यिद ग़ुलाम मोईनुद्दीन नई़मी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه के "कश्फ़ुल मह़जूब" के उर्दू तर्जमे से मवाद ले कर उस का फ़ारसी नुस्ख़े से तक़ाबुल करवा के ज़रूरी तरमीम व इज़ाफ़ा कर के तय्यार किया गया है। (शोबा : हफ़्तावार रिसाला)

मेरे प्यारे दाता हुज़ूर رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ का सिल्सिलए नसब सात वासित़ों से नवासए रसूल, जन्नती जवानों क सरदार ह़ज़रते इमाम ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से होता हुवा मुसलमानों के चौथे ख़लीफ़ा, ह़ज़रते मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से जा मिलता है। दाता हुज़ूर رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ के वालिदे माजिद ह़ज़रते सय्यिद उ़स्मान हजवेरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ अपने वक़्त के बहुत बड़े आ़लिमे दीन और आ़बिदो ज़ाहिद बुज़ुर्ग थे और दाता हुज़ूर رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की वालिदए माजिदा दूसरे नवासए रसूल, इमामे आ़ली मक़ाम इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की आले पाक से थीं, यूं मेरे आक़ा, मेरे दाता हुज़ूर رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ नजीबुत्तरफ़ैन (यानी वालिदे मोह़तरम और वालिदए मोह़तरमा दोनों की जानिब से) सय्यिद थे। वालिदए मोह़तरमा भी बड़ी नेक सिफ़त, वलिय्या ख़ातून थीं। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ! मेरे प्यारे दाता हुज़ूर رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ इन नेक हस्तियों की बरकात लिए ह़सनी जमाल और हुसैनी कमाल दोनों ही के जामेअ़ थे।

(फ़ैज़ाने दाता अ़ली हजवेरी, स. 5 ता 6 माख़ूज़न)

मेरे पीरो मुर्शिद अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने दाता हुज़ूर رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की शान में एक मन्क़बत लिखी है, उस के चन्द अश्आ़र येह हैं :

हो मदीने का टिकट मुझ को अ़ता दाता पिया आप को ख़्वाजा पिया का वासित़ा दाता पिया
काश ! मैं रोया करूं इ़श्क़े रसूले पाक में सोज़ दो ऐसा पए अह़मद रज़ा दाता पिया
गो ज़लीलो ख़्वार हूं पापी हूं मैं बदकार हूं आप का हूं आप का हूं आप का दाता पिया

(वसाइले बख़्शिश, स. 543)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

इ़ल्मी फ़ज़्लो कमाल

मेरे प्यारे दाता हुज़ूर رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने के लिए अपने शहर से बाहर कई मुल्कों का सफ़र फ़रमाया, सिर्फ़ ख़ुरासान के तीन सौ मशाइख़ की ख़िदमत में ह़ाज़िरी दी, साह़िबे रिसालए क़ुशैरिया ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल

क़ासिम अ़ब्दुल करीम बिन हवाज़िन क़ुशैरी رَحۡمَۃُاللّٰہِعَلَیۡہ और ह़ज़रते अबुल क़ासिम अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ली गरगानी رَحۡمَۃُاللّٰہِعَلَیۡہ आप के असातिज़ए किराम में से हैं। दाता हुज़ूर رَحۡمَۃُاللّٰہِعَلَیۡہ ख़्वाजा अबुल फ़ज़्ल मुह़म्मद बिन ह़सन जुनैदी رَحۡمَۃُاللّٰہِعَلَیۡہ के मुरीद थे। (کشف المحجوب، ص24،25)

मामूलात और दीनी ख़िदमात

अल्लाह पाक ने अपने इस मर्दे क़लन्दर, वलिए कामिल हुज़ूर दाता अ़ली हजवेरी رَحۡمَۃُاللّٰہِعَلَیۡہ को उ़लूमे ज़ाहिरी और बातिनी से नवाज़ा था और आप ने इ़ल्मे दीन को आ़म फ़रमा कर ख़ूब ख़िदमते दीन फ़रमाई, आप ने कई कुतुब लिखीं, जिन में से चन्द के नाम येह हैं : ﴾1﴿ मिन्हाजुद्दीन ﴾2﴿ दीवान ﴾3﴿ बह़रुल क़ुलूब ﴾4﴿ अर्रिआ़यतु बि हुक़ूक़िल्लाह ﴾5﴿ कश्फ़ुल मह़जूब। अफ़सोस ! फ़ी ज़माना आप की किताबों में से सिर्फ़ "कश्फ़ुल मह़जूब" (यानी पर्दों में छुपी बातों को ज़ाहिर करने वाली) ही आसानी से दस्तयाब है। अल्लाह पाक ने आप की इस किताब को बे पनाह मक़्बूलियत से नवाज़ा है। दुनिया की कई ज़बानों में इस मुबारक किताब के तर्जमे हो चुके हैं और शायद लाखों कुतुब प्रिन्ट हुई हैं। मेरे प्यारे दाता हुज़ूर رَحۡمَۃُاللّٰہِعَلَیۡہ की मश्हूरे ज़माना किताब "कश्फ़ुल मह़जूब" से तय्यार किया गया येह रिसाला चन्द बुज़ुर्गाने दीन رَحۡمَۃُاللّٰہِعَلَیۡہِم के वाक़िआत पर मुश्तमिल है। वाक़ेई़ आप की किताब "कश्फ़ुल मह़जूब" अपने नाम के मिस्दाक़ है। अल्लाह पाक की दाता हुज़ूर पर रह़मत हो और आप के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।

اٰمِیۡن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

मेरे प्यारे दाता हुज़ूर رَحۡمَۃُاللّٰہِعَلَیۡہ की सीरत के बारे में मज़ीद मालूमात ह़ासिल करने के लिए मक्तबतुल मदीना का रिसाला "फ़ैज़ाने दाता अ़ली हजवेरी

(सफ़हात : 80)” पढ़िए और दावते इस्लामी की वेबसाइट से फ़्री डाउनलोड कर के दूसरों को भी शेयर कीजिए। अल्लाह पाक ! हमें अपने औलियाए किराम رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِم का अदबो एहतिराम करने और उन के नक़्शे क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और उन की कुतुब व मल्फ़ूज़ात के फ़ैज़ान से मालामाल फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

﴾1﴿ दुआ़ए वली ने तक़्दीर बदल दी

सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिया के ग्यारहवें पीरो मुर्शिद ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ने बाबुत्ताक़ (एक अ़लाक़े का नाम है, उस) के बाज़ार में एक आग की इ़बादत करने वाले शख़्स को देखा जो निहायत ख़ूबसूरत था, मैं ने बारगाहे इलाही में दुआ़ की : ख़ुदाया ! इसे मेरी (यानी इस्लाम की) त़रफ़ फेर दे, तूने इसे कितना ख़ूबसूरत पैदा किया है ! कुछ अ़र्से बाद वोह ग़ैर मुस्लिम मेरे पास आया और मुझ से कहने लगा : ऐ शैख़ ! मुझे कलिमए शहादत पढ़ाइए और मुसलमान कर के दर्जए विलायत तक पहुंचाइए। (کشف المحجوب، ص54)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

सच कहा कहने वाले ने :

दुआ़ए वली में वोह तासीर देखी बदलती हज़ारों की तक़्दीर देखी

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

﴾2﴿ मैं अपने ग़ुलामों के ग़ुलाम से कुछ नहीं मांगता

किसी बादशाह की एक दरवेश से मुलाक़ात हुई, बादशाह ने अ़र्ज़ की :

अगर आप को किसी चीज़ की ज़रूरत हो तो फ़रमाइए। उन्हों ने जवाब दिया : मैं अपने ग़ुलामों के ग़ुलाम से कुछ नहीं मांगता। बादशाह ने पूछा : किस त़रह़ ? दरवेश ने फ़रमाया : मेरे दो ग़ुलाम हैं और वोह दोनों तेरे आक़ा हैं। एक ह़िर्स, दूसरा उम्मीद। (کشف المحجوب، ص21)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बेहिसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِین بِجاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! जिस ने ह़िर्स और बेजा तमन्नाओं को अपना ग़ुलाम बना लिया, वोह ह़क़ीक़ी मानों में बादशाह है और जो इन का ग़ुलाम बन गया, वोह तख़्त पर बैठ कर भी फ़क़ीर है। इस वाक़िए़ में उन बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने ह़िर्स व उम्मीद को अपना ग़ुलाम फ़रमाया है, मत़लब येह कि मैं ने अपने नफ़्स को इस त़रह़ क़ाबू में कर लिया है कि लालच और दुनिया की ख़्वाहिशात मेरे ताबेअ़ हैं, मैं इन का ताबेअ़ नहीं जब कि येह दोनों चीज़ें बादशाह की आक़ा हैं क्यूंकि वोह सल्त़नत, माल, त़ाक़त और दुनिया की मज़ीद ख़्वाहिशात ह़ासिल करने की ह़िर्स और उम्मीदों के पीछे चल रहा है, गोया बादशाह उन का ग़ुलाम है और अल्लाह पाक के नेक बन्दे औलियाए किराम رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہِم अल्लाह पाक की अ़त़ा से ह़िर्स व उम्मीद की आफ़त से मह़फ़ूज़ हैं इस लिए उन्हें बादशाहों से कुछ सरोकार नहीं। (इस वाक़िए़ की मज़ीद ताईद आगे ह़ज़रते फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ के वाक़िए़ में पढ़िए)

सच कहा कहने वाले ने :

किस चीज़ की कमी है मौला तेरी गली में — दुनिया तेरी गली में उ़क़्बा तेरी गली में
तख़्ते सिकन्दरी पर वोह थूकते नहीं हैं — बिस्तर लगा हुवा है जिन का तेरी गली में

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللہُ عَلٰی مُحَمَّد

﴾3﴿ बुरा भला कहने वाले को कुछ न फ़रमाया

ह़ज़रते शैख़ अबू ताहिर ह़रमी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه एक दिन दराज़गोश (यानी गधे) पर सुवार हो कर बाज़ार से गुज़र रहे थे, एक मुरीद लगाम थामे हुए साथ था। किसी ने बुलन्द आवाज़ से आप को बुरा भला कहा। मुरीद की ग़ैरत ने जोश मारा वोह उस शख़्स की त़रफ़ दौड़ा तो पीरो मुर्शिद ने मुरीद को आवाज़ दी और फ़रमाया : अगर तुम ने ख़ामोशी इख़्तियार की तो एक नसीह़त वाली चीज़ दिखाऊंगा ताकि तुम इस सख़्ती से बाज़ रहो। मुरीद ख़ामोश हो गया। जब घर पहुंचे तो मुरीद से फ़रमाया : फ़ुलां सन्दूक़ उठा लाओ। वोह लाया उस में बहुत से ख़ुत़ूत़ (Letters) थे जो कई लोगों की त़रफ़ से ह़ज़रते शैख़ अबू ताहिर ह़रमी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के नाम लिखे थे। आप ने वोह ख़ुत़ूत़ निकाल कर मुरीद के आगे रख कर फ़रमाया : पढ़ो ! क्या लिखा है ? मुरीद ने देखा कि हर ख़त में उन के शैख़ के अल्क़ाबात लिखे हैं। किसी ने शैख़ुल इस्लाम, किसी ने ज़की (यानी बहुत ज़ियादा ज़हीन) किसी ने शैख़ ज़ाहिद (यानी दुनिया से बे रग़बत) किसी ने शैख़ुल ह़रमैन वग़ैरा लिखा था। शैख़ अबू ताहिर ह़रमी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने (आजिज़ी करते हुए) फ़रमाया : इन सब अल्क़ाब में मेरा नाम नहीं है। ह़ालांकि मैं कुछ भी नहीं हूं हर शख़्स ने अपने गुमान के मुत़ाबिक़ मुझे मुख़ात़ब किया (यानी बुलाया) है। अगर उस (यानी बाज़ार में बुरा भला कहने वाले) बेचारे ने अपने गुमान के मुत़ाबिक़ कोई बात कह दी या कोई बुरा लक़ब दे दिया तो बिगड़ने या नाराज़ होने की कोई ज़रूरत नहीं। (کشف المحجوب، ص61)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِین بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللہُ علٰی مُحَمَّد

﴾4﴿ नफ़्स का इम्तिहान लेने का मुन्फ़रिद अन्दाज़

मुसलमानों के तीसरे ख़लीफ़ा, ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ عَنْہ एक दिन खजूरों के बाग़ से इस ह़ाल में तशरीफ़ ला रहे थे कि लकड़ियों का गट्ठा आप के सर मुबारक पर रखा हुवा था ह़ालांकि आप चार सौ ग़ुलाम रखते थे। किसी ने अ़र्ज़ की : ऐ अमीरुल मोमिनीन ! येह क्या ह़ाल है ? आप ने फ़रमाया : أُرِيْدُ أَنْ أُجَرِّبَ نَفْسِيْ यानी मैंने चाहा कि अपने नफ़्स का तजरिबा करूं। (کشف المحجوب، ص62)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

यानी अगर्चे येह काम मेरे ग़ुलाम भी कर सकते थे मगर मैंने चाहा कि अपने नफ़्स का इम्तिह़ान लूं ताकि लोगों में जो मक़ामो मर्तबा है उस की वजह से येह नफ़्स किसी काम से मुझे बाज़ न रखे।

उ़लुव्वे शान का क्यूं कर बयां हो आप की प्यारे ह़या करती है मौला आप से मख़्लूक़े नूरानी

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللہُ عَلٰی مُحَمَّد

﴾5﴿ हर ग़म के बदले एक नूर

अल्लाह पाक के प्यारे नबी, ह़ज़रते ई़सा रूहुल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام के पास एक गुदड़ी थी जिसे वोह अपने साथ आस्मान पर ले गए। एक बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ने उन्हें ख़्वाब में देखा कि उन की गुदड़ी के हर पैवन्द (यानी फटे हुए कपड़े वग़ैरा पर लगाए हुए जोड़) से नूर निकल रहा है। मैं ने अ़र्ज़ की : ऐ ह़ज़रते मसीह़ عَلَیْہِ السَّلَام ! आप की गुदड़ी से येह अन्वार कैसे निकल रहे हैं ? फ़रमाया : येह मेरे इज़्तिरार (यानी बे क़रारी) और परेशानी के अन्वार हैं क्यूंकि मैं ने हर पैवन्द को इन्तिहाई ज़रूरत के वक़्त सिया था। अल्लाह पाक ने मेरे हर रंज के बदले मुझे एक नूर अ़ता फ़रमाया। (کشف المحجوب، ص48)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो । اٰمِین بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

मुश्किलों में दे सब्र की तौफ़ीक़ अपने ग़म में फ़क़त़ घुला या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 83)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

﴾6﴿ नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की गोद में इमामे आज़म رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ

ह़ज़रते सय्यिद अ़ली बिन उ़स्मान हजवेरी अल मारूफ़ दाता गंज बख़्श رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं मुल्के शाम में मस्जिदे नबवी शरीफ़ के मुअज़्ज़िन ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के मज़ारे पुर अन्वार के सिरहाने सोया हुवा था, ख़्वाब में देखा कि मैं मक्कए पाक में हूं और हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक बुज़ुर्ग को आग़ोश में बच्चे क़ी त़रह लिए हुए बाबे शैबा से दाख़िल हो रहे हैं, मैं ने फ़र्ते मह़ब्बत (यानी ग़ल्बए मह़ब्बत) में दौड़ कर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़दम मुबारक को चूम लिया, मैं बड़ा ह़ैरान था कि येह बुज़ुर्ग कौन हैं ? (अल्लाह पाक की अ़त़ा से) हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अपनी मोजिज़ाना शान से मेरे दिल की ह़ालत का अन्दाज़ा हो गया, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : येह तुम्हारे इमाम (अबू ह़नीफ़ा नोमान बिन साबित رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ) हैं ।

येह वाक़िआ बयान करने के बाद मेरे प्यारे दाता हुज़ूर رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : इस ख़्वाब से येह बात ज़ाहिर हुई कि इमामे आज़म رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ का इज्तिहाद हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पैरवी में बे ख़त़ा है क्यूंकि वोह हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पीछे ख़ुद नहीं जा रहे थे बल्कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ुद उन्हें उठाए लिए जा रहे थे चूंकि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ख़त़ा हो ही नहीं सकती इस लिए जो हुज़ूर

صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ हो उस से भी ख़ता का इम्कान नहीं। येह एक ख़ूबसूरत इशारा है। (کشف المحجوب، ص100،101)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِین بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

हो नाइबे सरवरे दो आ़लम, इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा

सिराजे उम्मत फ़क़ीहे अफ़ख़म, इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा

(वसाइले बख़्शिश, स. 583)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللہُ عَلٰی مُحَمَّد

﴾7﴿ ह़ज़रते फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ अस्ल में बादशाह हैं

फ़ज़्ल बिन रबीअ़ बयान करता है कि मैं ख़लीफ़ा हारून रशीद के साथ ह़ज के लिए मक्कए पाक ह़ाज़िर हुवा, ह़ज से फ़ारिग़ होने के बाद हारून रशीद ने मुझे कहा : अगर मर्दाने ख़ुदा (यानी अल्लाह पाक के औलिया) में से कोई यहां मौजूद हो तो हम उस की ज़ियारत के लिए जाएंगे, मैं ने कहा : जी क्यूं नहीं ! इस जगह ह़ज़रते अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ सन्आ़नी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ हैं, उस ने कहा : मुझे उन के पास ले चलो, जब हम उन के पास पहुंचे तो बहुत देर तक गुफ़्तगू होती रही, रुख़्सत के वक़्त हारून रशीद ने मुझ से कहा : उन से पूछो कि क्या उन के ज़िम्मे कुछ क़र्ज़ा है ? उन्हों ने फ़रमाया : हां ! क़र्ज़ा है, हारून रशीद ने मुझ से कहा : उन का क़र्ज़ा अदा कर दो। जब हम वहां से वापस आए तो उस ने कहा : ऐ फ़ज़्ल ! मेरा दिल किसी और बुज़ुर्ग से भी मिलने का शौक़ रखता है। मैं ने कहा : यहां ह़ज़रते सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ भी हैं। उस ने कहा : उन के पास भी ले चलो। चुनान्चे जब हम ह़ाज़िर हुए तो देर तक गुफ़्तगू होती रही, वापसी के वक़्त ख़लीफ़ा ने मुझे इशारा किया कि मैं उन से भी क़र्ज़ के बारे में पूछूं, मैं ने पूछा तो फ़रमाया : हां ! क़र्ज़ है।

ख़लीफ़ा ने मुझे हुक्म दिया कि उन का क़र्ज़ भी अदा कर दूं, बाहर आ कर ख़लीफ़ा ने मुझ से कहा : ऐ फ़ज़्ल ! अभी मेरा दिल नहीं भरा, किसी और बुज़ुर्ग से भी मुलाक़ात कराओ। मैं ने कहा : मुझे याद आया यहां ह़ज़रते फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ رَحْمَةُاللهِعَلَيْه भी तशरीफ़ फ़रमा हैं फिर हम उन की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए, वोह ऊपर एक गोशे में बैठे क़ुरआने करीम की तिलावत कर रहे थे, मैं ने दस्तक दी ! अन्दर से आवाज़ आई : कौन है ? मैं ने जवाब दिया : अमीरुल मोमिनीन आए हैं, उन्हों ने फ़रमाया : मुझे अमीरुल मोमिनीन से और उन्हें मुझ से क्या सरोकार ? हमारे कुछ बह़सो मुबाह़से के बाद उन्हों ने नीचे आ कर दरवाज़ा खोल दिया और चराग़ बुझा कर मकान के एक कोने में जा कर खड़े हो गए। मुसाफ़ह़े (यानी सलाम के दौरान हाथ मिलाने) के वक़्त हारून रशीद का हाथ उन के हाथ से मस (Touch) हुवा तो ह़ज़रते फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ رَحْمَةُاللهِعَلَيْه ने फ़रमाया : अफ़सोस है कि इतना नर्मो नाज़ुक हाथ दोज़ख़ में जलेगा। काश ! कि येह हाथ अ़ज़ाबे ख़ुदा से मह़फ़ूज़ रहता। हारून रशीद येह सुन कर रोने लगा और इतना रोया कि बेहोश हो कर गिर पड़ा। जब होश आया तो कहने लगा : ऐ फ़ुज़ैल رَحْمَةُاللهِعَلَيْه ! मुझे कोई नसीह़त फ़रमाइए ! आप ने फ़रमाया : ऐ अमीरुल मोमिनीन ! तेरा बाप (यानी ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْه) ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का चचा था। उन्हों ने ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से दरख़्वास्त की, कि मुझे अपनी क़ौम पर अमीर बना दीजिए ? ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ चचा ! मैं ने तुम को तुम्हारी जान पर अमीर बना दिया क्यूंकि अगर एक सांस अल्लाह पाक की फ़रमां बरदारी में गुज़रे तो वोह उस से बेहतर है कि लोग हज़ार साल तक तुम्हारी फ़रमां बरदारी करें क्यूंकि सरदारी से क़ियामत के दिन सिर्फ़ और सिर्फ़ नदामतो शर्मिन्दगी के इ़लावा कुछ ह़ासिल न होगा। हारून रशीद ने अ़र्ज़ की : और भी नसीह़त फ़रमाइए ! ह़ज़रते फ़ुज़ैल बिन

इयाज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : जब ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को लोगों ने ख़लीफ़ा बनाना चाहा तो ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने चन्द लोगों को बुलाया और उन से फ़रमाया : लोगों ने मुझे इस बला व मुसीबत में फंसा दिया है, मुझे क्या तदबीर करनी चाहिए ? क्यूंकि मैं सरदारी को मुसीबत समझता हूं अगर्चे लोग इसे नेमत ख़याल करते हैं। उन में से एक ने अ़र्ज़ की : ऐ उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ! अगर आप चाहते हैं कि क़ियामत के दिन अ़ज़ाबे इलाही से छुटकारा पाएं तो मुसलमान बुज़ुर्गों (बूढ़ों) को अपने वालिद की त़रह़ और जवानों को भाई और बच्चों को अपनी औलाद की त़रह़ समझें और उन सब के साथ वोही सुलूक कीजिए जो ख़ानदान का सरबराह वालिद अपने भाइयों, बेटों और दीगर अहलो अ़याल के साथ करता है। क्यूंकि येह इस्लामी ममालिक एक घर की मानिन्द हैं और इन में रहने वाले अहलो अ़याल। इस के बाद ह़ज़रते फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : ऐ अमीरुल मोमिनीन ! मुझे ख़त़रा है कि कहीं तुम्हारा येह ख़ूबसूरत चेहरा दोज़ख़ की आग में झुल्साया जाए। ख़ुदा का ख़ौफ़ रखो और उस का ह़क़ बेहतरीन त़रीक़े पर अदा करो। इस के बाद हारून रशीद ने अ़र्ज़ किया : आप पर कुछ क़र्ज़ है ? ह़ज़रते फ़ुज़ैल رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने जवाब दिया : हां ! ख़ुदा का क़र्ज़ मेरी गर्दन पर है और वोह उस की इत़ाअ़त है, मैं फ़िक्रमन्द हूं कि इस वजह से मेरी पकड़ न हो जाए। हारून रशीद ने अ़र्ज़ की : क़र्ज़ से मुराद लोगों का क़र्ज़ है ? आप ने फ़रमाया : अल्लाह पाक का शुक्रो एह़सान है। उस ने मुझे बहुत कुछ नेमत दे रखी है, मुझे कोई शिक्वा नहीं है कि लोगों से बयान करता फिरूं। हारून रशीद ने एक हज़ार अशरफ़ियों की थैली आप के आगे रख दी और अ़र्ज़ की : इसे अपनी ज़रूरतों पर ख़र्च फ़रमाइए। ह़ज़रते फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : ऐ अमीरुल मोमिनीन ! मेरी इतनी

नसीहतों ने तुम पर कुछ असर नहीं किया और अभी तक ज़ुल्म व हटधर्मी पर क़ाइम हो ? हारून रशीद ने कहा : मैं ने आप पर क्या ज़ुल्म व हटधर्मी का मुज़ाहरा किया है ? फ़रमाया : मैं तुम्हें नजात (यानी आख़िरत के रास्ते) की त़रफ़ बुलाता हूं और तुम मुझे मुसीबत में डालना चाहते हो। क्या येह ज़ुल्मो जफ़ा नहीं है ? येह सुन कर हारून रशीद और फ़ज़्ल बिन रबीअ़ दोनों रोने लगे और रोते हुए बाहर आ गए। इस के बाद हारून रशीद ने मुझे कहा : ऐ फ़ज़्ल बिन रबीअ़ ! ह़ज़रते फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अस्ल में बादशाह हैं और येह सब (यानी उन की नसीहतों के सबब रोने की कैफ़ियत का त़ारी होना और दुनिया से बे रग़बती) उन के दबदबे की दलील है जो दुनिया और आख़िरत के घर में उन्हें ह़ासिल है, दुनिया की तमाम ज़ेबो ज़ीनत उन की नज़र में कोई ह़ैसियत नहीं रखती।

(كشف المحجوب، ص105، 106)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِین بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

जुस्तुजू में क्यूं फिरें माल की मारे मारे हम तो सरकार के टुकड़ों पे पला करते हैं

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

﴾8﴿ अल्लाह पाक की अ़त़ा से पीरे कामिल मुरीदों के ह़ालात से वाक़िफ़ होता है

सिलसिलए आ़लिया क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिया के दसवें पीरो मुर्शिद ह़ज़रते सरी सक़त़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ज़ाहिरी ज़िन्दगी शरीफ़ में मुरीदों ने ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه (जो कि ह़ज़रते सरी सक़त़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के मुरीद व ख़लीफ़ा

थे इन) से अ़र्ज़ की : ऐ शैख़ ! हमें एक नसीह़त फ़रमाइए जिस से हमारे दिलों को चैन व क़रार आए। आप ने फ़रमाया : जब तक मेरे शैख़ (ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه) अपने मक़ाम पर जल्वा अफ़रोज़ (यानी ह़यात) हैं मैं कोई तल्क़ीन नहीं कर सकता। यहां तक कि एक रात ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दीदार हुवा तो हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन से फ़रमाया : ऐ जुनैद ! लोगों को नसीह़तें क्यूं नहीं करते ताकि अल्लाह पाक तुम्हारे ज़रीए एक जहान को नजात अ़ता फ़रमाए। जब आप बेदार हुए तो आप येह ख़याल फ़रमा रहे थे कि मेरा दर्जा मेरे शैख़ के दर्जे में पैवस्त (यानी शामिल) हो गया है और मुझे नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नेकी की दावत का हुक्म इरशाद फ़रमाया है। जब सुब्ह़ हुई तो ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने एक मुरीद को भेजा कि जब जुनैद नमाज़े फ़ज्र का सलाम फेरें तो उन से कहना : तुम ने मुरीदों के कहने से तालीमो तब्लीग़ न की और न मशाइख़े बग़दाद की सिफ़ारिश क़बूल की। अब तो नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का हुक्म भी हो चुका है। ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : उस वक़्त मैं ने जाना कि मेरे शैख़ मेरे दिली ख़यालात को जानते हैं और वोह मेरी ज़ाहिरी व बातिनी हर ह़ालत से बा ख़बर हैं। उन का दर्जा मेरे दर्जे से बुलन्द है क्यूंकि वोह मेरे दिली ख़यालात से वाक़िफ़ हैं और मैं उन के ह़ालात से बे ख़बर हूं, इस के बाद मैं अपने शैख़ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और तौबा व इस्तिग़फ़ार किया।

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

मेरे प्यारे दाता हुज़ूर رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ येह वाक़िआ लिखने के बाद इरशाद फ़रमाते हैं : येह वाक़िआ रौशन दलील है कि मुर्शिद जिस हाल में भी हो वोह मुरीदों की हर हालत से बा ख़बर होता है। (کشف المحجوب، ص131)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

﴾9﴿ ख़ूबसूरत लड़के को देखने की सज़ा

एक साहिब का बयान है कि मैं ने एक ग़ैर मुस्लिम ख़ूबसूरत अमरद लड़के को देखा। मैं उस का हुस्नो जमाल देख कर हैरान रह गया और उस के सामने जा कर खड़ा हो गया। इतने में ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ का इधर से गुज़र हुवा, मैं ने उन से अ़र्ज़ की : ऐ उस्ताद ! अल्लाह पाक ऐसे ह़सीनो जमील चेहरे को दोज़ख़ में जलाएगा ? आप ने फ़रमाया : ऐ बेटे ! तेरा येह देखना इ़ब्रत के लिए नहीं है बल्कि येह नफ़्स का खेल है क्यूंकि अगर तू निगाहे इ़ब्रत से देखे तो आ़लम के हर ज़र्रे में ऐसे कई अ़जाइब मौजूद पाएगा। फिर (अल्लाह पाक की अ़त़ा से ग़ैब की ख़बर देते हुए इरशाद फ़रमाया :) तुझे बहुत जल्द मशिय्यते इलाही की बे हुर्मती की वजह से सज़ा मिलने वाली है। वोह साहिब बयान करते हैं : ह़ज़रते जुनैदे बग़दादी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ मुंह फेर कर तशरीफ़ ले गए तो उसी वक़्त मेरे ह़ाफ़िज़े से क़ुरआने करीम फ़रामोश हो गया। यहां तक कि मैं ने सालों अल्लाह पाक से मदद मांगी और तौबा की, तब कहीं जा कर फिर से क़ुरआने करीम की नेमत मुझे ह़ासिल हुई। (کشف المحجوب، ص146)

ह़ाफ़िज़े की तबाही का एक सबब

ऐ दीदारे मदीना के आरज़ूमन्द आ़शिक़ाने रसूल ! देखा आप ने ! अमरद (यानी ख़ूबसूरत लड़के) की त़रफ़ "लज़्ज़त" के साथ देखने से ह़ाफ़िज़ा भी तबाह हो सकता है।

आज कल याद दाश्त की कमी की शिकायत आ़म है, हुफ़्फ़ाज़ की भी एक तादाद ह़ाफ़िज़े की कमज़ोरी की आफ़त में मुब्तला है और बहुत सों को तो क़ुरआने पाक ही भुला दिया जाता है (क़ुरआन शरीफ़ या फ़ुलां आयत "भूल" गया कहने के बजाए "भुला दिया गया" कहना मुनासिब है) बद निगाही और ,T.V वग़ैरा पर फ़िल्में ड्रामे देखना गुनाह व ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है और उस से ह़ाफ़िज़ा भी कमज़ोर हो जाता है। ह़ाफ़िज़ा कमज़ोर होने के और भी कई अस्बाब हैं लिहाज़ा ख़बरदार ! किसी ह़ाफ़िज़ साहि़ब की मन्ज़िल कमज़ोर होने की सूरत में मह़ज़ अपनी अटकल से येह ज़ेहन बना लेना कि बद निगाही के सबब ऐसा हुवा है, बदगुमानी है और मुसलमान पर बदगुमानी ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। ऐ ख़ौफ़े ख़ुदा और इ़श्क़े मुस्त़फ़ा रखने वाले इस्लामी भाइयो ! लरज़ उठिए ! कि जब अमरद को शहवत के साथ देखने का इस क़दर ख़ौफ़नाक अन्जाम है तो न जाने उस से आगे के बुरे कामों का अ़ज़ाब किस क़दर शदीद होगा !

अमीरे अहले सुन्नत बानिए दावते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : ख़बरदार ! अमरद तो आग है आग ! अमरद का क़ुर्ब, उस की दोस्ती उस के साथ मज़ाक़ मस्ख़री, आपस में कुश्ती, खींचा तानी और लिपटा लिपटी जहन्नम में झोंक सकती है। अमरद से दूर रहने ही में आ़फ़ियत है अगर्चे उस बेचारे का कोई क़ुसूर नहीं, अमरद होने के सबब उस की दिल आज़ारी भी मत कीजिए मगर उस से अपने आप को बचाना बेह़द ज़रूरी है। (ग़ीबत की तबाहकारियां, स. 329)

याद रहे ! अमरद के फ़क़त़ चेहरे ही को शहवत के साथ देखना गुनाह नहीं, निगाहें नीची होने के बावुजूद अमरद के सीने या हाथ या पांव वग़ैरा बल्कि

सिर्फ़ लिबास ही पर नज़र पड़ रही हो और "गन्दी लज़्ज़त" आ रही हो तो उन आज़ा या लिबास को देखना भी गुनाह व ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। अगर किसी लड़के की त़रफ़ बार बार देखने को जी चाह रहा हो और गन्दी लज़्ज़त के बाइ़स वहां से हटने का दिल न करता हो, तो वहां से फ़ौरन हट जाए। अगर مَعَاذَالله शहवत के बावुजूद उस को देखा या वहां रहा तो गुनहगार और जहन्नम का ह़क़दार है। अल्लाहुल ग़फ़्फ़ार ! हमें अ़ज़ाबे नार से मह़फ़ूज़ फ़रमाए और अमरद के गुनाहों भरे क़ुर्ब से उ़म्र भर बचाए रखे। اٰمِيْن بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बस पक्का ज़ेहन बना लीजिए कि बद निगाही की आफ़त और अम्रद की नज़्दीकी की मुसीबत से हर ह़ाल में اِنْ شَآءَ الله अपनी ह़िफ़ाज़त करेंगे। (इ़स मौज़ूअ़ के मुतअ़ल्लिक़ मज़ीद मालूमात के लिए अमीरे अहले सुन्नत का रिसाला "क़ौमे लूत़ की तबाहकारियां" पढ़िए और दावते इस्लामी की वेबसाइट से मुफ़्त डाउनलोड कर के दूसरों को भी शेयर कीजिए।)

छुप के लोगों से किए जिस के गुनाह वोह ख़बरदार है क्या होना है
काम ज़िन्दां के किए और हमें शौक़े गुल्ज़ार है क्या होना है
अरे ओ मुजरिम बे परवा ! देख सर पे तल्वार है क्या होना है
उन को रह़म आए तो आए वरना वोह कड़ी मार है क्या होना है

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 167-169)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَى الله ❀❀❀ اَسْتَغْفِرُ الله

﴾10﴿ एक नेकी काम आ गई

ह़ज़रते अबू ह़फ़्स उ़मर बिन सालिम ह़द्दाद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ख़ुरासान के बहुत बड़े बुज़ुर्ग थे। आप की तौबा का वाक़िआ बड़ा ही ईमान अफ़रोज़ है। आप

رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को जवानी में एक कनीज़ से इ़श्क़ हो गया। उसे मनाने की बहुत कोशिश की मगर कोई तदबीर काम न आई। लोगों ने बताया कि नेशापूर में एक ग़ैर मुस्लिम जादूगर रहता है जो जादू के ज़रीए इस काम को आसान कर सकता है। (यानी कनीज़ के दिल को आप की त़रफ़ फेर सकता है) आप उस के पास पहुंचे और उस से अपना ह़ाल बयान किया। ग़ैर मुस्लिम जादूगर ने कहा : ऐ अबू ह़फ़्स ! तुम्हें चालीस दिन नमाज़ छोड़नी होगी और इन चालीस दिनों में न तो ज़बान पर ख़ुदा का नाम लाना होगा और न नेकी का कोई काम करना होगा। अगर इस पर राज़ी हो तो मैं जन्तर मन्तर पढ़ता हूं ताकि तुम्हारी मुराद पूरी हो जाए। आप ने उस ग़ैर मुस्लिम जादूगर की येह शर्त़ मान ली और चालीस दिन इस त़रह़ गुज़ार दिए। इस के बाद जब उस ग़ैर मुस्लिम जादूगर के पास पहुंचे तो उस ने अपना जादू किया मगर मुराद पूरी न हुई। जादूगर कहने लगा : ग़ालिबन तुम ने शर्त़ पूरी नहीं की। ज़रूर तुम से कोई ख़िलाफ़ वर्ज़ी हुई है और नेकी का कोई काम हुवा है। ज़रा सोच कर बताओ ! अबू ह़फ़्स ने कहा : मैं ने कोई नेकी का काम नहीं किया अलबत्ता ! एक दिन मैं ने रास्ते में पत्थर देखा तो उसे इस ख़याल से पांव से हटा दिया कि किसी को ठोकर न लग जाए। जादूगर बोला : अफ़सोस है तुम पर कि तुम ने चालीस दिन तक ख़ुदा के हुक्म की ना फ़रमानी की और अपने दिल से यादे ख़ुदा को भुलाए रखा लेकिन ख़ुदा ने तेरे एक अ़मल को भी ज़ाएअ़ नहीं जाने दिया। येह सुन कर आप ने सच्चे दिल से तौबा की और वोह ग़ैर मुस्लिम जादूगर भी मुसलमान हो गया। (كشف المحجوب، ص130، 131)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो। اٰمِيْن بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

मैं ने माना कि सब से बुरा हूं किस का हूं ? तेरा हूं मैं तेरा हूं
नाज़ रह़मत पे मुझ को बड़ा है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ है

(वसाइले बख़्शिश, स. 141)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

﴾11﴿ मूए मुबारक की बरकत

ह़ज़रते अबुल अ़ब्बास सय्यारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ के बारे में मश्हूर है कि आप मर्व के अ़लाक़े के एक बड़े मालदार शख़्स थे। आप ने अपने वालिद की मीरास में बहुत मालो दौलत पाया लेकिन येह तमाम मालो अस्बाब दे कर आप ने कहीं से हु़ज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दो मूए मुबारक ह़ासिल कर लिए। अल्लाह पाक ने आप को इन मूए मुबारक की बरकत से सच्ची तौबा की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई और फिर आप ने ह़ज़रते अ़बू बक्र वासित़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की सोह़बत में रह कर ऐसा कमाल पाया कि सूफ़ियाए किराम رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِم के इमाम हो गए। आप फ़रमाया करते थे कि मुझे जो कुछ मिला इन मूए मुबारक की बरकत से मिला। जब आप दुनिया से रुख़्सत होने लगे तो वसिय्यत की, कि इन मूए मुबारक को मेरे मुंह में रख देना चुनान्चे ऐसा ही किया गया। (दाता हु़ज़ूर رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं :) इसी का असर है कि मर्व में आज भी आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ के मज़ार शरीफ़ का निशान है। लोग मज़ारे मुबारक पर ह़ाज़िर हो कर मुरादें मांगते हैं और अपनी मुश्किलात दूर होने की दुआएं करते हैं तो उन की मुरादें पूरी और मुश्किलें आसान हो जाती हैं। येह बात तजरिबे से साबित है। (کشف المحجوب، ص165)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِین بِجاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

जो करे ताज़ीम दिल से दो जहां में कामयाब   हो गया हां हो गया मूए मुबारक आ गए

(वसाइले बख़्शिश, स. 721)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴾12﴿ दिल की बात जान ली

एक बुज़ुर्ग बयान करते हैं कि एक दिन मैं ह़ज़रते अबू अ़ली बिन हुसैन बिन मुह़म्मद दक़्क़ाक़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की महफ़िल में इस लिए गया कि मैं उन से मुतवक्किलीन (यानी अल्लाह पाक पर तवक्कुल करने वालों) का ह़ाल मालूम करूं। आप उस वक़्त एक निहायत उ़म्दा इ़मामा शरीफ़ सर पर बांधे हुए थे। मेरा दिल आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ के इ़मामे शरीफ़ पर माइल हो गया। मैं ने अ़र्ज़ किया : शैख़ ! तवक्कुल क्या है ? आप ने फ़रमाया : तवक्कुल येह है कि तुम लोगों के इ़मामे का लालच न करो। येह फ़रमा कर अपना इ़मामा शरीफ़ मेरे आगे रख दिया।

(کشف المحجوب، ص170)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिए

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आरास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में मक्तबतुल मदीना के शाएअ़ कर्दा रसाइल और मदनी फूलों पर मुश्तमिल पैम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइए, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिए अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मामूल बनाइए, अख़बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या मदनी फूलों का पैम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दावत की धूमें मचाइए और ख़ूब सवाब कमाइए।

फ़ेहरिस्त

दाता हुज़ूर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का मुख़्तसर तआरुफ़.. 1

इल्मी फ़ज़्लो कमाल.. 2

मामूलात और दीनी ख़िदमात... 3

(1) दुआए वली ने तक़्दीर बदल दी.. 4

(2) मैं अपने ग़ुलामों के ग़ुलाम से कुछ नहीं मांगता.............................. 4

(3) बुरा भला कहने वाले को कुछ न फ़रमाया................................. 5

(4) नफ़्स का इम्तिहान लेने का मुन्फ़रिद अन्दाज़............................... 7

(5) हर ग़म के बदले एक नूर.. 7

(6) नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की गोद में इमामे आज़म رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه 8

(7) ह़ज़रते फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अस्ल में बादशाह हैं 9

(8) अल्लाह पाक की अ़ता से पीरे कामिल मुरीदों के ह़ालात से वाक़िफ़ होता है...12

(9) ख़ूबसूरत लड़के को देखने की सज़ा 14

हाफ़िज़े की तबाही का एक सबब 14

(10) एक नेकी काम आ गई 16

(11) मूए मुबारक की बरकत..18

(12) दिल की बात जान ली..19

अगले हफ़्ते का रिसाला

DAWATEISLAMI INDIA

FGN Channel
Dekhte Rahiye

MAKTABATUL MADINA INDIA

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025